संयुक्त समिति में सदस्य की नियुक्ति
APPOINTMENT OF MEMBER TO JOINT COMMITTEE

श्री खाडिलकर (खेड) : मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि चौधरी रणधीर सिंह को, भारत के संविधान में आगे संशोधन करने वाले विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति में, श्री के० हनुमन्थैया के स्थान पर, जिन्होंने त्याग-पत्र दे दिया है, नियुक्त किया जाये ।"

अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

"कि चौधरी रणधीर सिंह को, भारत के संविधान में आगे संशोधन करने वाले विधेयक सम्बन्धी संयुक्त समिति में, श्री के० हनुमन्थैया के स्थान पर, जिन्होंने त्याग-पत्र दे दिया है, नियुक्त किया जाये ।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ
The motion was adopted

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में प्रस्ताव
MOTION RE: INTERNATIONAL SITUATION

प्रधान मंत्री, अणु-शक्ति मंत्री, योजना मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : मैं प्रस्ताव करती हूं :

"कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा उसके सम्बन्ध में भारत सरकार की नीति पर विचार किया जाये ।"

आज की विश्व की स्थिति लगभग हमारे देश की स्थिति के समान है । यह स्थिति आशा तथा निराशा का मिश्रण है । एक ओर तो अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा शान्ति तथा आर्थिक उन्नति की ओर प्रयत्न किये जा रहे है तो दूसरी ओर तनाव के केन्द्र हैं जो विश्व समुदाय में संघर्ष तथा विभाजन के कारण हैं ।

बर्मा, श्रीलंका और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों के साथ हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं । हमने हाल ही में बर्मा के साथ सीमा समझौता किया है । मैंने श्रीलंका की यात्रा की है तथा वहां के गवर्नर जनरल ने भारत की यात्रा की है और इससे हमें पारस्परिक विचार विनिमय के अवसर मिले हैं ।

भारत तथा दूसरे विकासशील देशों में द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग और तकनीकी सहायता का हमने एक छोटा सा कार्यक्रम बनाया हुआ है । किन्तु एशिया की आर्थिक प्रगति और सहयोग की दिशा में प्रयत्न तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक कि कुछ क्षेत्रों में संघर्ष चल रहा है । यही कारण है कि शुरू से ही हम यह प्रयत्न करते रहे हैं कि शान्ति की समस्याओं में रुचि लें और जहां कहीं भी संघर्ष हो रहा हो, वहां शान्तिपूर्वक समझौता कराने का प्रयत्न करें ।

वियतनाम में चल रहे संघर्ष में हमारी रुचि बहुत अधिक है और हम आशा करते हैं कि वहां बमबारी रोक दी जायेगी ताकि युद्ध की बजाय समझौता वार्ता करने का अवसर मिल सके। अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग के सभापतित्व की जिम्मेवारी हम अभी तक इस आशा में निभा रहे हैं कि अन्त में वह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का कोई मार्ग शायद ढूंढ़ निकाले। अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग के कर्मचारियों ने बहुत ही कठिन परिस्थितियों में अपना कर्त्तव्य पूरा किया हैं।

कम्बांडिया तथा लाओस को बहुत ही कठिन परिस्थितियों का सामना है। वे दबाव तथा कठिनाइयों के होते हुए भी तटस्थ बने रहने का प्रयास कर रहे हैं। हमने हाल ही में लाओस के नरेश का स्वागत किया है जिससे हमें उनको यह बताने का अवसर मिला है कि हमारी आकांक्षायें तथा आदर्श समान हैं। फिजी के मुख्य मंत्री ने भी हमारे देश की यात्रा की है। हमने वहां के शान्तिपूर्ण और संतुलित विकास में सहयोग देने में अपनी रुचि का आश्वासन दिया है। मोरिशस के प्रधान मंत्री, सर रामगुलाम की यात्रा से हमें वहां के लोगों के साथ अपने पुराने सम्बन्ध नये करने का अवसर मिला है।

हमारा देश तथा आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड एक दूसरे की अधिक भली भांति समझने लगे है। हमारा भौगोलिक क्षेत्र एक ही है और कई तरह से हमारे हित एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। हमारा मन आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री सर हेर्लड होल्ट की दुखद मृत्यु के कारण दुखी हैं। हमें आस्ट्रेलिया के लोगों के साथ सहानुभूति है।

ब्रिटेन ने हमें जिन शर्तों पर ऋण दिया है, हम उनकी प्रशंसा करते है, कनाडा के साथ भी हमारे सम्बन्ध सुदृढ़ हो रहे हैं। कई वर्षों से अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण आयोग में और बहुत सी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर एक साथ हम काम कर रहे हैं।

हमने सुरक्षा परिषद में एक ऐसा संकल्प तैयार करने के लिये बहुत प्रयत्न किये हैं, जिससे संयुक्त राष्ट्र संघ मध्यस्थ को पश्चिम एशिया क्षेत्र में सामान्य स्थिति पुनः स्थापित करने का आधार प्राप्त हो सके। हमने इस संकल्प का स्वागत किया हैं। हम मध्यस्थ को उनके इस कठिन काम के लिये, जो उन्होंने अपने हाथ में लिया है, शुभ कामनायें भेंट करते है, हम दक्षिणी यमन के स्वतन्त्र गणराज्य की स्थापना का भी स्वागत करते हैं।

अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के देशों के साथ भी हमारे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं। विश्व के बारे में हमारे समान दृष्टिकोण हैं। हमारा किसी भी पश्चिमी अथवा पूर्वी यूरोपीय देश के साथ विवाद नहीं हैं। दोनों भूभागों ने हमारे आर्थिक विकास में कई भिन्न-भिन्न तरीकों से योगदान दिया है परन्तु यूरोप के अधिक उन्नत देश हमें अपने साथ व्यापार करने योग्य बनाने के लिये बहुत कुछ कर सकते हैं जिसके द्वारा हमारे आर्थिक सम्बन्ध अधिक सुदृढ़ आधार पर बन सकते हैं।

पश्चिमी जर्मनी के चांसलर की भारत यात्रा से भी हमें एक दूसरे की समस्याओं को अधिक अच्छी तरह समझने में बहुत सहायता मिली है तथा जर्मनी के संघीय गणराज्य के साथ और गहरे आर्थिक, सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक सहयोग की नींव डाल दी गई है।

अमरीका तथा रूस के साथ हमारा आर्थिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक कामों के बड़े क्षेत्र में सहयोग बढ़ता जा रहा है। हम उनके द्वारा दी जा रही मित्रतापूर्ण सहायता और अपने राष्ट्रीय लक्ष्यों को पूरा करते के हमारे प्रयत्नों में उनकी आस्था की प्रशंसा करते हैं।

इन देशों के साथ हमारे बढ़ रहे मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों के होते हुए भी यह दुख की बात है कि हमारे दो पड़ोसी देशों के सम्बन्ध में हमारी स्थिति अभी तक असंतोषजनक है। चीन का हमारे प्रति शत्रुता का रवैया बना हुआ है। वह कभी भी हमारी निन्दा करने और भारत सरकार तथा हमारी समूची लोकतन्त्रीय प्रणाली तथा राष्ट्रीय अखण्डता के विरुद्ध प्रचार करने के अवसर को हाथ से जाने नहीं देता। हमारे चीन के लोगों के प्रति कोई बुरे इरादे नहीं हैं और हमें आशा है कि एक दिन वह अनुभव करेंगे कि दक्षिण पूर्व एशिया के देशों के हित में हममें मित्रता होनी चाहिये, हमें विश्वास है कि भारत तथा पाकिस्तान के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों से दोनों की शक्ति बढ़ेगी और जनता का जीवन स्तर ऊंचा होगा। इसीलिये हमने ताशकन्द घोषणा का स्वागत किया है और कठिनाइयों के बावजूद भी अपनी ओर से इस घोषणा को क्रियान्वित करने का प्रत्येक सम्भव प्रयास कर रहे हैं।

निशस्त्रीकरण को बढ़ावा देने सम्बन्धी अपने प्रयत्नों में हमने कोई ढील नहीं की है। इसलिये, परमाणु शस्त्रों के प्रसार को रोकने की आंशिक अथवा भेदपूर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ शंकायें होते हुए भी हमारा विश्वास है कि इस प्रकार की अभूतपूर्व शक्ति के स्रोत का विनाशकारी कामों के लिये नहीं बल्कि शान्तिपूर्ण कामों के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस सम्बन्ध में मैं संयुक्त राष्ट्र व्यापार तथा विकास सम्बन्धी आयोग के दूसरे सम्मेलन का उल्लेख करना चाहती हूं। यह सम्मेलन शीघ्र ही दिल्ली में हो रहा है। हम सभी विकसित तथा विकासशील राष्ट्रों के बीच बढ़ती हुई असमानता के प्रति सजग है। सम्मेलन में विकासशील देशों की आर्थिक उन्नति के लिये तथा अधिक संसाधन जुटाने के लिये प्रयास किया जायेगा। विकासशील देश सहायता की मांग नहीं कर रहे हैं। वे व्यापार करने के अवसर की मांग करते हैं। अतः हमें अल्पविकसित देशों का जीवन स्तर बढ़ाने के लिए अपने प्रयास जारी रखने चाहिये।

विदेश नीति निर्धारित करते समय राजनैतिक तथा आर्थिक दृष्टि से राष्ट्रीय हितों पर ध्यान दिया जाना चाहिये। इसके साथ ही हमें दीर्घकालीन दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, कुछ स्थानीय अथवा किसी क्षेत्र विशेष की परिस्थितियों में कभी कुछ परिवर्तन हो सकता है और इन परिवर्तनों के कारण हमें नया कार्यक्रम आरम्भ करना पड़ सकता है। हम नई स्थिति के अनुसार समायोजन कर सकते हैं तथापि हमें आधारभूत सिद्धान्तों से दूर नहीं होना चाहिए तथा ऐसे कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे देश बदनाम हो, हमें अपने आपमें विश्वास होना चाहिए तथा अपनी विचारधारा तथा कामों को इस प्रकार बनाना चाहिये कि वे देश के दीर्घकालीन हित में सिद्ध हो सकें।

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ। अब संशोधन प्रस्तुत किये जायेंगे।

श्री बे० कृ० दास चौधरी (कूच बिहार) : मैं संशोधन संख्या 1 प्रस्तुत करता हूं।